चतुर्थ अध्याय

" 'मुखड़ा क्या देखे' उपन्यास का परिवेशगत अध्ययन "

चतुर्थ अध्याय

विवेच्य उपन्यास का परिवेशगत अध्ययन

उपन्यास विधा में परिवेश को अनन्य महत्त्व रहता है। परिवेश के अंतर्गत स्थल काल तथा वातावरण का चित्रण होता है, और वह कथावस्तु के अनुकूल होता है। कथावस्तु के अनुसार उपन्यास में उस देश का, उसकी सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक परिस्थितियों का चित्रण किया जाता हैं।

शिवनारायण श्रीवास्तव के मतानुसार - " किसी स्थिति विशेष का सफल अंकन न हो सकने के कारण कभी - कभी भावों की पूर्ण व्यंजना नहीं हो पाती और कोई अभाव - सा खटकता रहता है। सूक्ष्म निरीक्षण के छोटे - छोटे चमत्कारद्वारा ही इतनी शीघ्रता और पूर्णता के साथ वास्तविक जीवन का भ्रम उत्पन्न कराया जा सकता है। वातावरण के सफल तथा मनोरम चित्रण का कहानी के लिए मूल्य होता है। कभी - कभी सामान्य, सडकों, गलियों तथा बरसात में टपकनेवाले घरों के साधारण वर्णन से भी कहानी में विलक्षण मोहकता आ जाती है।" [1]

पात्रों की मानसिक स्थिति का और प्रकृत्ति का वर्णन पाठकों पर अच्छा खासा प्रभाव निर्माण करता है। आधुनिक उपन्यास यथार्थ की भाव - भूमि पर खडा है, अतः कथानक को अधिक स्वाभाविक बनाने के लिए उचित वातावरण आवश्यक है। गुलाबरायजी – के विचार से " कथानक के पात्र भी वास्तविक पात्र की भाँति देश - काल के बन्धन में रहते हैं। यदि वे भगवान की भाँति देशकाल के बन्धनों से परे हों तो वे भी हम लोगों के लिए अभेद्य रहस्य बन जायेंगे, इसलिए देश - काल का भी वर्णन आवश्यक हो जाता है। व्यक्ति के निर्माण में वातावरण का बहुत कुछ हात होता है, जिस प्रकार बिना अँगूठी के नगीना शोभा नहीं देता उसी प्रकार बिना देश - काल के पात्रों का व्यक्तित्व भी स्पष्ट नहीं होता और घटनाक्रम को समझने के लिए भी इसकी आवश्यक होती है।" [2]

'मुखड़ा क्या देखे' इस उपन्यास में देशकाल और वातावरण का तथा परिवेश का वर्णन हुआ है। उपन्यास में बलापुर, दुल्लोपुर, मुडकी इलाहाबाद आदि गाँवों तथा शहरों के वातावरण, रहन - सहन, रीति - रिवाज, संस्कृति तथा प्रकृत्ति का वर्णन अब्दुल बिस्मिल्लाहजी ने बडी ही कुशलता के साथ यहाँ कैसे चित्रित किया है, इसे हम यहाँ देखेंगे -

4.1 विवेच्य उपन्यास का परिवेश

अब्दुल बिस्मिल्लाहजी ने अपने 'मुखड़ा क्या देखे' उपन्यास में इलाहाबाद के समीप स्थित बलापुर गाँव को केन्द्र में रखकर देश के स्वतंत्र होने से लेकर आपातकाल लागू होने तक की कहानी को चित्रित किया है। इस कहानी में नेहरूजी का शासनकाल, चीन का आक्रमण, शास्त्रीजी के शासनकाल में भारत - पाकिस्तान युध्द, इंदिराजी के कार्यकाल में काँग्रेस का विभाजन, बांग्लादेश का उदय, आपातकालीन स्थिति नकसलवाद का उभार इन सभी घटनाओं की अनुगूँज उपन्यास में सुनाई पड़ती है।

उपन्यास की शुरूवात में लेखक ने आजादी के बाद लोगों की बदली मानसिकता का तथा आंदोलन का खुमार अभी भी लोगों के मन में कायम है इसका वर्णन किया है। लोगों को स्वर्गीय म. गांधीजी भी जीवित ही लगते हैं, स्वाधीनता और स्वराज का नशा चारों ओर गहरा और सर्वव्यापी दिखाई देता हैं। गाँधी और नेहरू तो भारतवासियों के लिए साक्षात कलियुग के अवतार ही बने हैं। गाँव के गँवई के गीतों में भी इसका असर दिखाई देता है जैसे -

" एक दिन सखियन संग सैंया
चली गयी गुलजार में
नेहरूजी को गुलाब में देखा
गाँधीजी को अनार में
एक दिना सखियन संग सैंया .....।" [3]

इन पंक्तियों से गाँव की स्त्रियों के मन में भी आजादी की घटनाएँ एवं हमारे राष्ट्रपुरूषों के कार्यों का गौरव ताजी घटनाओं की भाँति अंकित है, यही सिध्द होता है। अब्दुल बिस्मिल्लाहजी ने स्वाधीनता के बाद के इन उल्हासपूर्ण दिनों का परिवेश उभारकर रखा है।

अली अहमद अपने पर हुऐ अन्याय को मखदुम नाउ के पास व्यक्त करता है, मखदुम नाउ अली को पंडित नेहरूजी के पास जाने की सलाह देता है। अली पंडित नेहरूजी से मिलने इलाहाबाद पहुँचता है, लेकिन एक पनवाडी उसे पंडित नेहरूजी इतनी आसानी से बडे लोगों को भी नहीं मिल सकते, और हम तो आम आदमी हैं, तथा पंडित नेहरूजी देश के प्रधानमंत्री है, और वह राजधानी दिल्ली में रहते हैं, ऐसा कहकर अली को सच्चाई से अवगत करने का प्रयास करता है। लेकिन अल्ली कहता है - " मगर सुना है कि जवाहर लालजी पहले के राजा लोगों की तरह राजा नहीं हैं। वे परधानमंत्री है।" [4] और आगे भी कहता है - " मगर हमारा देस तो अब आजाद हो गया है। जनता का राज है यहाँ।" [5] इस कथन से उपन्यास में नेहरूजी के शासन कालखंड तथा भारतीय लोकशाही प्रणाली इन दोनों का परिवेश उभारकर सामने रखा है, जिससे उपन्यास के स्थल और काल को तथा वातावरण को वाणी मिलती है।

हिंदूस्तान आजाद होने के बाद भी कुछ ईसाई लोग यहाँ रहते थे, और उन्होंने अपने धर्म का प्रचार एवं प्रसार करने की शुरवात की थी। अली अहमद जब दुल्लोपुर पहुँचता है, तब वहाँ इंडियन फादर अशोक फ्रांसिस अली अहमद से कहते है - " अरे अली अहमद, तुम ईसाई क्यों नहीं हो जाते ? आखिर प्रभु यीशु ख्रीस्त को तो तुम लोग भी मानते हो। अगर तुम ईसाई हो जाओ न, तो तुम्हारे बेटे को

हम विलायत भिजवा दें पढ़ने के वास्ते।" [6] तथा पतरस भाई कहता है, " अगर तुम जैसा कोई इलाहाबादी आदमी ईसाई बन जाय न, तो हमारे समाज की हालत सुधर सकती है।" [7] इन कथनों से हिंदूस्तान में चल रहे धर्मप्रसार के कार्यों का परिचय प्राप्त होता है। उपन्यास में धर्मपरिवर्तन की हवा का परिवेश खुलकर सामने आता है।

पंडित नेहरूजी की मृत्यु के बाद लालबहादुर शास्त्रीजी देश के प्रधानमंत्री बने। शास्त्रीजी के व्यक्तित्व को लेकर जनता में विशेष आदर रहा है, तत्कालिन अखबार भी उनकी परिस्थिति एवं व्यक्तित्व की चर्चा करते हैं, उनके अनुसार "शास्त्रीजी एक गरीब परिवार से आए हैं। मिर्जापुर के लाल डिग्गी नामक मुहल्ले में उनकी ननिहाल है। रामनगर में घर। बचपन में संस्कृत पढने रामनगर से बनारस नाव से जाया करते थे। एक रोज पैसा न होने के कारण तैरकर जा रहे थे कि गंगा में डुबने लगे ..... मल्लाहों ने बचाया .....।" [8] सत्तार की अम्माँ भी अपने घर में उपस्थित कुछ स्त्रियों को बता रही थी - " शास्त्रीजी अपनी मौत नहीं मरे। उन्हें मरवाया गया है।" [9] इन कथनों के अनुमान से शास्त्रीजी का शासनकाल तथा उनकी मृत्यु के दिन आदि कालखंड को उपन्यासकार ने परिवेश के अंतर्गत खडा कर दिया है। भारत - पाकिस्तान युध्द में भारत की जीत तथा भारतीय जनता में निर्माण हुए जोश को भी उपन्यासकार ने व्यक्त किया है, जिससे तत्कालिन राजनीतिक परिवेश की गहमागहमी का परिचय मिलता है।

इलाके में पडे जबरदस्त अकाल का वर्णन भी उपन्यास के परिवेश को साकार बनाता हैं तथा अकाल की भयानकता तत्कालीन जनजीवन को प्रभावित करती है। इलाके के सभी लोग काम - धंदे के लिए गाँव छोड रहे हैं। नालों का पानी सूख गया है। ढोर - जानवर पटापट मरने लगे हैं। न खाने को चारा है, न पीने को पानी। इस अवस्था का चित्रण उपन्यासकार ने परिवेश के अंतर्गत रखकर अकाल के कारण विस्थापन एवं स्थलांतर की स्थिति को यथार्थ रूप में उभारा है।

लेखक ने उपन्यास में बलापुर तथा उसके आसपास के गाँवो में मनाएँ जानेवाले त्योहारों, उत्सवों, शिवरात्री, दशहरा, रामलीला, दिवाली आदि का भी यथार्थ चित्रण किया हैं, जिससे भारतीय ग्रामीण संस्कृति के पर्वो, मेलों, कलाएँ, रीतियाँ, रूढियाँ एवं विविध संस्कारों का स्थान आदमी के जीवन में किस तरह आनंदोल्लास निर्माण करता है, इसका स्वाभाविक चित्रण परिवेश के रूप में प्रबलता के साथ किया है।

अब्दुल बिस्मिल्लाहजीने प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी के कार्यकाल को भी उपन्यास के परिवेश में चित्रित किया है। लोगों में पहली भारतीय महिला प्रधानमंत्री को लेकर काफी उत्सुकता है। इंदिराजी के शासन कालखंड में अन्य नेताओं के काँग्रेस पार्टी छोडने के कारण काँग्रेस की अवस्था तथा काँग्रेस - विभाजन का भी राजनीतिक परिवेश के अंतर्गत चित्रण किया हैं।

देश में हो रहे चुनाव के कारण ग्रामीण जनता तथा छोटे - छोटे बच्चे भी इससे प्रभावीत हुऐ हैं, इसका भी चित्रण परिवेश के रूप में उभारा है। बलापुर में हो रहे चुनाव की गहमागहमी को लेखक इस तरह व्यक्त करता हैं - " आये दिन काँग्रेस, जनसंघ सोशलिस्ट तथा अनेकानेक निर्दलीय पार्टियों की गाडियाँ आती और झंडे, पोस्टर, बैच आदि बाँटकर लाउडस्पीकरों से नारों का उच्चार करती हुई चली जाती।" [10] " तथा घरों की दीवारें पोस्टरों से और खपरैलें झंडों से भर गई

थी। माहौल में ऐसा उल्लास समाया हुआ था, मानो देश में चुनाव नाम के किसी नए त्योहार का अविष्कार हुआ हो - और उसमें दीवाली - ईद से भी ज्यादा मजा आनेवाला हो।'' [11] राजनीतिक चुनाव के इस चित्र ने उपन्यास के परिवेश में तत्कालीन स्थिति को उभारा है।

पश्चिमी पाकिस्तान और पूर्वी पाकिस्तान के बीच के जंग ने बांग्लादेश निर्मिती को आंदोलन की गती प्रदान की जिससे हजारो लोग हिंदूस्तान आकर बसने लगे हिंदूस्तान ने भी उन्हें पनाह देकर उनके राशन पानी की व्यवस्था की।

भारत में जगह - जगह रिफ्यूजी कैंप बन गए हैं। बांग्लादेश की निर्मिती होने के बाद सभी बंगाल के लोग वापस जा रहे हैं, उनमें से कई लोग हिन्दूस्तान में रहना चाहते हैं। एक बंगाली बाबू बांग्लादेश नहीं जाते। अलीद्वारा बांगलादेश न जाने का कारण उसे पूछने पर वह कहता है - '' मगर अम नई जाएगा अल्ली भाई, कई नई जाएगा। कैंप के शारे लोग चले गए आज। किंतू अम इदर भाग आय। तुम लोगों शे जो प्रेम मिला है, उसे अम नई भुला शकता। अम इदरई रहेगा।'' [12]

इन प्रसंगों से बांगला विभाजन का कालखंड तथा उससे प्रभावित भारतीय जनजीवन का वर्णन उपन्यासकार ने उपन्यास के परिवेश में यथार्थ रूप में चित्रित किया है।

देश में इमरजेंसी लगने की खबर से पूरे शहर में सन्नाटा छा जाता है। विपक्ष के बडे - बडे नेता गिरफ्तार कर लिए गए हैं, गुंडे - बदमाश पकडे जा रहे हैं। एक अजीब सी घबराहट एवं चिंता लोगों के चेहरों पर दिखाई दे रही है। आपातकालीन परिस्थिति से प्रभावित लोगों का चित्रण उपन्यासकार ने परिवेश के रूप में खींचा हैं।

इन सभी घटना, प्रसंग, कालखंड, स्थल ने उपन्यास के परिवेश को यथार्थता प्रदान की है।

निष्कर्ष :-

संक्षिप्त में हम कह सकते है कि विवेच्य उपन्यास में लेखक ने राजनीतिक परिवेश से उत्पन्न स्थितियों को यथार्थ रूप में चित्रित करके उपन्यास के परिवेश को जिंदा बना दिया है।

4.2 बनती - बिगडती स्थितियों का वातावरण

'मुखड़ा क्या देखे' उपन्यास में भारत की आजादी से लेकर देश में जारी की गयी आपातकालीन स्थिति तक की घटनाओं का वर्णन किया है। इस उपन्यास में मूल कथा के साथ संबंधित परिवेश में कुछ अच्छी - बुरी स्थितियाँ उत्पन्न हो गई है। उन बनती - बिगडती स्थितियों का परिवेशजन्य वातावरण यहाँ प्रस्तुत किया गया है।

अली अहमद की बीवी लडके को जन्म देती है, इस घटना से अली के अपने भउजी के परिवार के साथ टूटे हुऐ संबंध फिर से स्थापित हो जाते हैं। दोनों परिवार एक जगह ही रहते थे, लेकिन उनमें बातचीत तक नहीं होती थी, मगर एक छोटीसी घटना ने उनकी स्थितियों में परिवर्तन कर दिया इसका वर्णन लेखक ने इस प्रकार किया है- ''घर का नजारा बदल गया था। भीतरवाली कोठरी के द्वार पर पुरानी साडी का पर्दा पड गया था और अगले हिस्से को भतीजों ने गुलजार कर रखा था। जीवन में जन्म - मृत्यु और विवाह - त्योहार जैसी चीजें न हों तो अनेक तरह की शत्रुताएँ हमेशा - हमेशा तक शत्रुताएँ ही बनी रहें।'' [13] इस घटना से उपन्यास की कथा में लेखक ने रिश्तों की बनती हुई स्थितियों का वर्णन किया है।

लता के विवाह में अली अहमद हक लेने के लिए उपस्थित नहीं रह पाता, इसका रामवृक्ष पाण्डेजी को गुस्सा आता है। वह सोचते है कि '' जरूर उस मुसल्ले का दिमाग खराब हो गया है। अब बन न गया पाकिस्तान, हिन्दूस्तान में जगह न मिली तो पाकिस्तान चले जाएँगे।'' [14] ऐसा सोचकर इस घटना से अपना अपमान समझकर अली अहमद को पीटते है। इस घटना से लेखक ने अँग्रेजों के चले जाने के बाद भी हमारे देश के उच्चवर्णियोंद्वारा गरीबों पर अत्याचार किया जाता है। इस अत्याचारी वातावरण को यहाँ उभारा है।

फुल्ली दाई की नातिन रामकली एक रात अचानक चीखने लगी जिससे चमरौटी में भयानक शोर होता है, वह कहती है '' दाई दाई, ऊ दहिजरा हमरें उप्पर गिरि के हमका दबाए देत रहा .....।'' [15] सुबह इस घटना का सारे गाँव में पता चलता है। पं. सृष्टिनारायणद्वारा रामकली की इज्जत लूटने पर भी फुल्ली दाई उनके खिलाफ आवाज नहीं उठा सकती। इससे गाँव में गरीब औरतों पर अन्याय - अत्याचार होने पर भी वे उसे चुपचाप सहती है। साथ ही अल्ली अहमद सोचता है कि '' जब फुल्ली दाई की नन्हीं - सी नातिन पर लोगों की नीयत बिगड़ा सकती है तो रनिया पर क्यों नहीं ? वह तो चुडिहाइन हैं, उसे घर - घर जाना होता है। किसी रोज अगर रामवृक्ष पाण्डे के यहाँ से बुलावा आया तो क्या वह नहीं जाएगी ? '' [16] इससे अली अहमद के मन में असुरक्षीतता की भावना निर्माण होती है और वह गाँव छोडने का निर्णय करता है। यहाँ लेखक ने गरिबों के प्रति ग्रामांचलो में उच्चवर्णियों का हीन व्यवहार तथा गरीब लोगों की असुरक्षीतता की स्थिति का वर्णन परिवेश में जान भरता है।

अली अहमद के शहपुरा पहुँचने के बाद वहाँ उसके परिचय का कोई भी नहीं होता है, दलाल चच्चा का पता भी मालुम नहीं हैं ऊपर से घनघोर बारिश हो रही है। एसी अवस्था में अली, रनिया उनका बेटा एक दुकान के सामने असहाय

अवस्था में खडे हैं, उस सम्य नुरू नाम का मुसलमान आदमी अली के परिवार को अपने घर ले जाकर उन्हें खाना खिलाता है, रहने को जगह देता है। इस तरह दुल्लोपुर में पतरस भाई ने अली को मकान में जगह देकर दूकान खोलने के लिए भी सहायता की इन घटनाओं से समाज के कुछ लोगोंद्वारा मानवता के दर्शन होते है, इस बनती हुई स्थितियों के वातावरण को लेखक ने अत्यंत संवेदनशीलता के साथ चित्रित किया है।

इलाके में भयानक अकाल की परिस्थिति निर्माण होने पर सरकारद्वारा लोगों के लिए राहत सामग्री भेजी जाती है, लेकिन अधिकारीवर्ग उसे उचित ढंग से नहीं बाँटते और लोगों से पैसों की माँग करते है, इस हड़पनीति के परिवेश का वर्णन करके लोगों की बिगडती मानसिक स्थिति को लेखक ने दृष्टिगोचर किया है।

जबलपुर में हिंदू - मुसलमानों के बीच दंगा हो जाता है, भयंकर मारकाट होती है, तब देश के प्रधानमंत्री पंडित नेहरूजी दोनों धर्मियों को शांती बनाऐ रखने का आवाहन करते है, वह हिन्दूओं से बोले " मुसलमानों का क्या है, वे तो बकरे - बकरियाँ हैं। तुम लोग जब चाहो उन्हें काटकर खा सकते हो मगर यह न भूलो कि वे भी तुम्हारे ही घर के सदस्य है। क्या अपने ही घर के सदस्यों को मारने में तुम्हें दया नहीं आएगी ? " [17] इस घटना से हिंदू - मुसलमान झगडा रोकते है। इस सांप्रदायिक हादसे के परिवेश का वर्णन उपन्यास में किया है, जिससे देश की बनती - बिगडती स्थिति दृष्टिगोचर होती है।

बलापुर लौटने के बाद अली अहमद रामवृक्ष पाण्डेजी की मृत्यु की खबर सुनकर निराश होता है, पाण्डे परिवारद्वारा बेइज्जती होने पर भी वह उनके परिवारजनों से मिलने के लिए उनके घर जाते है। इस घटना से अली अहमद की सहृदयता एवं मानवता को लेखक ने व्यक्त करते हुए उपन्यास में संवेदनशील परिवेश को उभारने का प्रयत्न किया है।

बुद्धू बलापुर के स्कूल में पढता है, तब समाज के उच्चवर्णिय बच्चे उसे मुसल्ला, कटुआ, मियाँ - मियाँ कहकर चिढ़ाते है और उसका अपमान करते है। इससे निराश होकर बुद्धू रोते हुए घर आकर अपनी अम्माँ से कहता है - " अम्माँ, अब मैं स्कूल नहीं जाऊँगा।" [18] इस तरह बुद्धू का स्कूल हमेशा के लिए छूट जाता है। इस जातीयता तथा धार्मिक भेदाभेद के वातावरण से भारतीय समाजजीवन की बिगडती हुई स्थितियों का चित्रण लेखक ने यथार्थता के साथ किया है।

बलापुर में रामलीला की तैयारियाँ चल रही थी, पंडित सृष्टिनारायण पाण्डे उसमें मुन्ना को नचाने के लिए तोते पासी को कहते है, मगर 'ननकुआ' नाम का लडका नाचने के लिए तैयार था इसलिए तोते पासी मुन्ना को नचाने के लिए इन्कार कर देते है। जिससे सृष्टिनारायण पाण्डे को क्रोध आता है, और वह तोते पासी का घर लुटते है। इस घटना से पाण्डेजी के विषय में गरीबों के मन में असंतोष निर्माण होता है, इससे गाँवजीवन में छोटे - छोटे कारणों से बिगड़ावजन्य वातावरण का निर्माण कैसे होता है इसे लेखक ने चित्रित किया है।

बुद्धू - भूरी के प्रेम के कारण सृष्टिनारायण पाण्डे लोगों को धार्मिकता तथा जातीयता के नाम पर भडकाते हैं, और कहते है - " देखो, मामला ई हिंदू - मुसलमान का है..... पासी हैं तो क्या हुआ, आखिर है तो हिंदू ही और क्या तुम इस बात को बरदास करोगे कि एक हिंदू लडकी को कोई मुसल्ला ..... ? [19]

कहकर चुडिहार परिवार के प्रति लोगों में क्रोध उत्पन्न कराते हैं। बुद्धू और भूरी भाग जाकर शादी करते है। उसी रात ही पंडित सृष्टिनारायण पाण्डे अली अहमद को लागोंद्वारा बूरी तरह पीटते है। प्रेमविवाह में स्थित सांप्रदायिक बिगड़ाव की स्थितियों का परिवेश यहाँ लेखक ने उभारकर भारतीय समाजजीवन की मानसिकता पर प्रकाश डाला हैं।

बांगलादेश की निर्मिती को लेकर उत्पन्न समस्या के कारण हिंदूस्तान में भी लोग प्रभावित होते हैं। लोगों के घर लूटे जा रहे हैं, खून – खराबा हो रहा हैं। भारत सरकार उनकी मदद कर रही है। विभिन्न शहरों, कस्बों गावों में लोग पनाह ले रहे हैं। " भारत सरकार की ओर से उन्हें राशन - पानी उपलब्ध कराया जा रहा है।" [20] इस प्रकार जंग की स्थितियों से निर्माण परिवेश की बिगडती जा रही स्थितियों का चित्रण यहाँ लेखक ने खींचकर तत्कालीन राजनीतिक वातावरण को वाणी देने का प्रयत्न किया है।

बलापुर में अजय ग्रामीण पुस्तकालय खोलने की तैयारी कर रहा है। उसका विचार है कि पुस्तक, अखबार, पत्रिकाएँ आदिद्वारा इन्सान की मानसिक शक्ति का विकास होता है, सोचने - समझने के स्तर में परिवर्तन होता है। इस घटना से लेखक ने तत्कालीन सामाजिक परिवेश की आवश्यकता पर बल देने का प्रयत्न किया हैं।

सृष्टिनारायण पाण्डे की हत्या के कारण बलापुर के तीन निर्दोष लोगों को गिरफ्तार किया जाता है, जिसके खिलाफ बवाली आवाज उठाते हुए समाज में सशस्त्र क्रांति की माँग करता है। जब तक नेता और धनी लोग एक साथ हैं, तब तक अन्याय - अत्याचार होता रहेगा इस दुषित परिस्थिती को भी लेखक दृष्टिगोचर करता है। देश में लागू किये आपातकाल के कारण विपक्ष नेताओं की गिरफ्तारी से शहरों में एक प्रकार के भय का माहौल उत्पन्न हुआ है, इस बनती - बिगड़ती स्थितियों को भी लेखक ने उजागर करने का प्रयास किया है। लल्लू की हत्या से गरीबों की अन्यायग्रस्त अवस्था को भी लेखक ने सामने लाया है। ग्रामीण जीवन में होनेवाले हत्याकांड को दिखाकर लेखक ने एक क्रुर तथा भयावह परिवेश के कारण ग्रामीण जीवन की बिगड़ावजन्य स्थिति को उभारा है।

निष्कर्ष :-

संक्षिप्त में इस भाग में अली अहमद के बेटे के जन्म के समय की स्थिति का, लता के विवाह के अवसर पर अली अहमद को हुई पीटाई का, रामकली पर हुई जबरी का, स्थलांतरित अली अहमद का, शहपुरा जाने पर वहाँ उसे नुरू नामक व्यक्ति की हुई सहायता का, जबलपुर में हुए हिंदू - मुसलमान सांप्रदायिक दगों का, रामवृक्ष पांडे की मृत्यु के उपरांत पांडे से पीटे गये अली अहमद का, संवेदना प्रकट करने रामवृक्ष पांडे के घर जाने का, जातीय एवं धर्मगत चक्की में पीसे जानेवाले बालक बुद्धू का, जमींदारों द्वारा गरीबों पर होनेवाले अत्याचारों का, भूरी - बुद्धू के प्रेम विवाह को हिंदू - मुस्लिम सांप्रदायिकता का रंग चढाने की षड्यंत्री नीति का सृष्टिनारायण पाण्डे की हत्या का, लल्लू की हत्या का परिवेश

लेखक ने अत्यंत यथार्थता के साथ चित्रित करके उपन्यास के वातावरण को ऊँचाई तक पहुँचाने का प्रभावी काम किया है। और मानवी - जीवन में स्थित बनती - बिगड़ती परिवेशजन्य स्थितियों का अच्छा जायजा लिया है।

4.3 स्वातंत्र्योत्तर जनसामान्य की स्थितियों का वातावरण

अब्दुल बिस्मिल्लाहजी के 'मुखड़ा क्या देखे' की कथा भारतीय स्वाधीनता के बाद की है। इस कथा में देश के भीतर तथा बाहर घटित सारी घटनाओं की छाप आम आदमी के जीवन पर किस रूप में पडी है, तथा उनकी स्थितियो में कौनसा परिवर्तन हुआ है, इसका वर्णन लेखक ने यथार्थरूप से किया है। उन स्थितियों का विवेचन उपन्यास के वातावरण को एवं परिवेश को कैसे प्रभावजन्य बनाता है, इसे यहाँ देखेंगे -

दलितों के शोषण की स्थिति :-

स्वाधिनता के बाद भी दलितों की स्थिति में कुछ खास परिवर्तन नहीं आया। समाज के उच्चवर्णियोंद्वारा उन पर अन्याय अत्याचार होते ही है। फुल्ली दाई की नातिन की इज्जत लुटी जाती है, अली अहमद को बिना किसी कारण पीटा जाता है। भगतराम पासी (तोते पासी) का घर लुटा जाता है। बुद्धू उर्फ डॉ. रफी अहमद, रामदेव चमार, तोते पासी, इन तीनों को निर्दोष होते हुए भी सृष्टिनारायण पाण्डे की हत्या करने के जुल्म में गिरफ्तार किया जाता है। लल्लु की हत्या की जाती है। बुद्धू तथा भूरी के प्रेम के कारण अली अहमद को पीटा जाता है, आदि घटनाओं से दलितों पर होनेवाला अत्याचार तथा उनकी शोषण की पीड़ा की स्थितियों का वातावरण लेखक ने उभारा है।

जातीय एवं धार्मिक भेदाभेद की स्थिति :-

आजादी के बाद भी जातीयता एवं धार्मिकता जनसामान्य से जुडी हुई थी। अली अहमद का बेटा बुद्धू जातीयता के शोषण के कारण त्रस्त हो जाता है, स्कूल के सभी बच्चे धर्म एवं जात के नाम पर बुद्धू की बेइज्जती करते हैं। जबलपुर में भी धार्मिकता के नाम पर हिंसा भडक उठती है। बुद्धू तथा भूरी के प्रेम को धार्मिकता का रंग देकर सृष्टिनारायण पाण्डेद्वारा लोगों को भडकाया जाता है। जब्बार मौलवी का बेटा सत्तार अली अहमद को अपने जात - बिरादरी का नहीं मानता। वह कहता है - " ऊ चुड़िहार है और हम तुरक। एक जात - बिरादरी के कैसे हुए ? "[21] इससे जातीय धार्मिक भेदाभेद का परिवेशजन्य वातावरण स्पष्ट होता हैं।

अंधविश्वासों, रूढी, परंपरा की स्थिति :-

स्वातंत्र्योत्तर भारतीय समाज अंधविश्वासों, रूढी, परंपराओं पर विश्वास करता है, एवं उसका अनुकरण करता है। पं. अशोककुमार पाण्डे शिक्षित होते हुए भी ताहिरा को पाने के लिए ज्योतिष विद्या का सहारा लेते हैं, और उसके अनुसार आचरण करते हैं। बुद्धू की बेटी बिमार होने पर गाँव की स्त्रियाँ भूरी को हनुमानजी के नाम का जप करने की सलाह देती है। जुम्मावाले दिन गाजी मियाँ से मानता मान लेना आदि हरकते भी की जाती हैं। रनिया कल्लो की बीमारी पर

कहती है - " नहीं। ई माताजी है बेटवा एम्मे दवाई नाँही चलत।" [22] आदि अंधविश्वासों का चित्रण लेखक ने किया है। अपना खानदानी पेशा न छोडने की रनिया की जिद परंपरावाद को उजागर करती हैं।

किसान मजदूरों की स्थिति :-

किसान और मजदूरों की अवस्था में भी आजादी से कोई परिवर्तन नहीं हुआ। जमींदार लोग खेती से लगान की वसूली करते थे। जिससे छोटे - छोटे किसान परेशान हैं। मजदूरों की हालत तो उससे भी खराब है दिनभर काम करने पर भी दो वक्त की रोटी भी उन्हें प्राप्त नहीं होती है।

आपसी ईर्ष्या द्वेष की स्थिति :-

प्रस्तुत उपन्यास में लेखक ने पात्रों की मानसिकता का चित्रण किया है। आजादी के बाद रामवृक्ष पाण्डेजी मुसलमानों को दुषितभाव से देखते है। उनके अनुसार पाकिस्तान की निर्मिती के कारण मुसलमानों के व्यवहार में परिवर्तन हुआ है। सृष्टिनारायण पाण्डे समाज के गरीब लोगों को किसी भी प्रकार का हक एवं अधिकार देने के विरोध में हैं। जब्बार मौलबी साहब अली अहमद को कोई भी मदद करना नहीं चाहते क्योंकि अली अहमद आगे चलकर उनके खिलाफ भी आवाज उठा सकता है। बिट्टन खालाँ भी अली की मदद के बावजूद उसे मुडकी में बेइज्जत करती है। अशोककुमार पाण्डे बुद्धू, बवाली, लता तथा अजय से इर्ष्या से व्यवहार करता है। अली की भउजी भी अली के परिवार के प्रति इर्ष्याभाव रखती है। यहाँ इर्ष्या - द्वेष से ग्रस्त पात्रों की मानसिकता को दिखाकर लेखक ने भारतीय जनता में स्थित मनोभावनाओं को परिवेशजन्य वातावरण के रूप में उठाया है।

हड़पनीति की स्थिति :-

लेखक ने उपन्यास के पात्रोंद्वारा हड़पनीति का वर्णन करते हुए उनके स्वार्थी एवं लालची मनोवृत्ति को उजागर किया है। सत्तार पोस्ट ऑफिस में से बचतखातों में जमा बावन हजार रूपयों का गबन करता है। अकालपीड़ित लोगों के लिए सरकारद्वारा भिजवाई गई राहतसामग्री अधिकारी वर्ग हड़प करते हैं। ऊपर से लोगों से पैसे भी माँगते हैं। अशोककुमार पाण्डे शिक्षित और अध्यापक होते हुए भी बिशुन भाट की बची सामग्री तथा मकान हड़प करने की सोचता है तथा उसने गरीबों की जमीन भी हड़प कर ली है, उसके बारे में सलीम कहता है – "चमार – पासियों के वास्ते सरकार ने कुछ जमीन दी थी - भूमिहीन वाली योजना में मगर ऊ सब भी असोकवा ने हथिया लिया।" [23] ग्रामजीवन के जमींदारों तथा अधिकारियों के बीच की हड़पनीति के दर्शन यहाँ होते है।

शिक्षा से परिवर्तन की स्थिति :-

स्वातंत्र्योत्तर जनमानस में शिक्षा से परिवर्तन हुआ है। बलापुर में स्कूल बनने से छोटे - छोटे बच्चे तथा लडकियाँ भी स्कूल जाने लगी, बुद्धू परंपरागत ढहुँचा - पहुँचा, मन - सेर वगैरा की शिक्षा छोडकर आधुनिक शिक्षा के लिए इंडियन मिडिल स्कूल दुल्लोपुर में नाम दर्ज करता है। लता में भी शिक्षा से परिवर्तन होता है। उसके अनुसार देश की स्थिति सुधारने के लिए लोगों की मानसिकता बदलने की आवश्यकता है। अजय पढ़ा लिखा होने के कारण गाँवों में छात्रों तथा लोगों के लिए पुस्तकालय खोलना चाहता है। अशोककुमार गाँव में अँग्रेजी स्कूल शुरू करता है। अशोक के दो युवा मित्र भी अँग्रेजी शिक्षा का समर्थन करते हैं। शिक्षित होने के कारण लता ऊँच - निच का भेदाभेद नहीं मानती, वह बुद्धू के घर जाकर पानी पीती है उसका कहना है - " शहर में तो सभी लोग सभी के साथ सभी कुछ - खा - पी रहे है।" [24] शिक्षा प्रसार से होनेवाले परिवर्तन के वातावरण को यहाँ ढालकर लेखक ने पाठकों को आधुनिक बोध की आवश्यकता पर बल दिया हैं।

चुनाव की स्थिति :-

स्वाधीनता के बाद शहरों की भाँति गाँव के लोग भी चुनाव में हिस्सा लेने लगे है, काँग्रेस, जनसंघ, सोशलिस्ट, सभी पार्टियों का प्रचार गाँवो में होने लगा है, बच्चे हाथों में झंडे लेकर घुमने लगे हैं, दीवारों पर पोस्टर दिखने लगे हैं, सामान्य आदमी भी चुनाव की गहमागहमी में व्यस्त रहने लगा है। प्रधानी इलेक्सन में बलापुर के सात लोग खडे हुए हैं जिससे लोगों की बदलती स्थिति दृष्टिगोचर होती है।

निष्कर्ष :-

संक्षिप्त रूप में हम कह सकते है कि विवेच्य उपन्यास में लेखकने दलितों की शोषण से उत्पन्न पीड़ा, धार्मिक एवं जातीय भेदाभेद, अंधविश्वासों एवं परंपराओं का जनमानस पर पडा प्रभाव - किसान - मजदूरों की स्थिति, आपसी ईर्ष्या - द्वेष से उत्पन्न स्थिति, हड़पनीति, शिक्षा प्रचार से होनेवाला परिवर्तन चुनाव से गाँव - जीवन में बिगड़ी हुई स्थिति आदि का चित्रण करके परिवेशजन्य वातावरण को उभारा है।

4.4 शोषणात्मक स्थितियों से युक्त वातावरण

अब्दुल बिस्मिल्लाहजी के 'मुखड़ा क्या देखे' उपन्यास में समाज के उच्चवर्गीय एवं निम्नवर्गीय लोगों के बीच का संघर्ष उजागर हुआ है। इस संघर्ष के दौरान समाज के संपन्न वर्ग के हिंदू और मुसलमान दोनों मिलकर हिंदू 'परजा' और मुसलमान 'परजा' का शोषण करते हैं। इस शोषण की स्थिति का विवेचन यहाँ कैसे प्रस्तुत किया गया है, इसे देखेंगे -

बलापुर के जमींदार पं. रामवृक्ष पाण्डे अपनी लडकी के विवाह में अली अहमद अपना हक लेने उपस्थित नहीं रहता इस कारण अली को बूरी तरह पीटते हैं जिससे अली निराश होकर जब्बार मौलबी साहब के पास मदद के लिए जाता हैं। मगर वे भी अली को ही दोषी ठहराते है। रामवृक्ष पाण्डे और जब्बार मौलबी दोनों भी बलापुर के जमींदार हैं। अली अहमद गरीब चुड़िहार है। यहाँ समाज के उच्चवर्णियोंद्वारा गरीब लोगों का शोषण किया जाता है, इस शोषण की स्थिति को लेखक ने उजागर किया है।

फुल्ली दाई अपनी नातिन के साथ बगिया में आम बीन रही थी, वह दृश्य देखकर रामवृक्ष पाण्डेजी को गुस्सा आता है, और वे कहते है - " ए फुल्ली । आपन भातर क बगिया समझ लिहै है का रे, भाग ज ससुई नाँहीं त बतावत हई अबहीं हम। मुड़िया काटिके उहै पलरा में दबाइ देब .....।" [25] यह दृश्य पीछड़े वर्गों की बेइज्जती दर्शाता है। पं. सृष्टिनारायण पाण्डे फुल्ली दाई की नातिन रामकली की इज्जत लूटते है, फिर भी फुल्ली दाई यह अन्याय चुपचाप सहती है, क्योंकि वह निम्नवर्गीय जात की है, और गाँव के जमींदारों के खिलाफ आवाज नहीं उठा सकती। इस घटना से समाज के निम्नवर्गीय लोगों के शोषण की स्थिति उजागर होती है।

जमींदार पं. रामवृक्ष की बेटी लता के विवाह में बाल कटवाने का पारिश्रमिक मखदूम नाऊ को न दिया जानेपर वह अपने आर्थिक शोषण के बारे में अली से कहता है - " बड़मनइन के हियाँ सोडरी से लेके बियाह के बखत तक लड़किन का बाल मुफ्त में ही बनाना पडता है। बदले में एक डब्बल नहीं मिलता। कहते हैं, बियाह में नेग न लोगे क्या ? अब तुम्हीं सोचो, यही नियाव है क्या ? मगर सब रिवाज तो बड़मनइन का बनाया हुआ है कि नहीं। अभी दुई पइसा - एक आना देंगे, तो ऐसे मानो कर्जा दे रहे हों।" [26] यहाँ ब्राह्मण जमींदारों से होनेवाला मखदूम नाऊ का शोषण दिखाया है।

इलाके में पडे भयान्क अकाल के कारण सरकारद्वारा सामान्य जनता के लिए राहतसामग्री भेजी जाती है। लेकिन अधिकारी वर्ग पूरी सामग्री को नहीं बाँटते बल्कि अधिकाधिक राहत सामग्री दबाकर रखते है। इनके व्यवहार के बारे में खलील कहता है - " सामान तो खूब है, मगर साहब कंजूसी कर रहा है। यह भी कह रहा था कि अगली बार से पैसा लेकर आना चवन्नी का पाउडर और अठन्नी का ये।" [27] यहाँ लेखक भ्रष्ट अधिकारोंद्वारा सामान्य जनता का होनेवाला शोषण उजागर करते है।

बुद्धू के स्कूल में उच्चवर्णिय लडके बुद्धू को मुसल्ला, कटुवा, मियाँ - मियाँ कहकर चिढाते हैं, अशोककुमार पाण्डे मुसलमान लोगों के व्यवहार कैसे

उलटे होते है, यह बताकर बुद्धू को अपमानीत करता है। इससे बुद्धू दुःखी होकर रोने लगता है। यहाँ लेखक ने जात एवं धर्म के नाम पर लोगों का किस तरह शोषण किया जाता है, इस शोषण की स्थिति को स्पष्ट किया है।

सृष्टिनारायण पाण्डे गाँव की रामलीला में मुन्ना नचनिया को नचाने के लिए तोते पासी को सूचित करता हैं, लेकिन तोते पासीद्वारा इन्कार कर देने पर सृष्टिनारायण पाण्डे क्रोधित होता है और रामलीला की रात को ही तोते पासी का घर लूटता है। यहाँ लेखक ने जमिंदारोंद्वारा गरीबों का होनेवाला शोषण दिखाया है।

पं. सृष्टिनारायण पाण्डेजी ने गरीब मुन्ना को रखैल बनाकर अपने पास रखा है। वह मुन्ना के नाच से पैसे भी कमाते है। मुन्ना पाण्डेजी की दिनरात सेवा करता है। मुन्ना जवान होने पर पाण्डेजी उसे दुर्लक्षित कर देते है, इससे मुन्ना पाण्डेजीसे इस व्यवहार के बारे में पूछताछ करता है, तब पाण्डेजी " चमार की औलाद जबान लडाता है। आज के बाद इस तरफ दिखाई दिये तो जिंदगी खराब कर दूँगा।" [28] ऐसा कहकर मारते पीटते है। इस घटना के वर्णन से गरीबों की शोषण की स्थिती लेखक ने व्यक्त की है।

रामवृक्ष पाण्डेजी की बेटी लता शादी के बाद बिल्कूल अकेली पड जाती है। ससुरालवाले तथा माँ - बाप के घर के सभी लोग उससे रिश्ता तोडते हैं। रामवृक्ष पाण्डेजी की मृत्यु लता के कारण ही हुई है, ऐसा उसके मयकेवाले तथा गाँववाले मानते हैं। जिससे लता की ओर सभी लोग दुषित नजर से देखते हैं। लता बलापुर के एक स्कूल में अध्यापिका है। दयाशंकर पाण्डे अपनी जान पहचान से लता का बलापुर से ट्रांसफर कर देते हैं। यहाँ लोगोंद्वारा तथा पाण्डे परिवार द्वारा लता का मानसिक शोषण किया जाता है, इस स्थिति को व्यक्त किया है।

बुद्ध - भूरी प्रेम के कारण सृष्टिनारायण पाण्डे लोगों में जातीय भावनाओं को भडकाकर लोगोंद्वारा अली अहमद को पीटते हैं इस तरह यहाँ अली के परिवार को फिर से शोषण का शिकार होना पडता है।

सृष्टिनारायण पाण्डे की हत्या के कारण अशोककुमार पाण्डे डॉ. रफी अहमद उर्फ बुद्धू, तोते पासी, रामदेव चमार इन तीनों बेगुनाहों को गिरफ्तार करवाता है। इससे समाज में हो रहे गरीबों के शोषण का चित्र स्पष्ट होता है। बवाली बुद्धू का साथ देता है, तथा बवाली के कहने से ही डॉ. रफी अहमद ने अशोककुमार पाण्डे को झूठे सर्टिफिकेट नहीं दिऐ इससे क्रोधित होकर अशोककुमार बवाली को भी गिरफ्तार करवाता है। यहाँ अन्याय के खिलाफ लडनेवालों की शोषण की स्थिति उजागर होती है।

रामदेउवा चमार धर्मपरिवर्तन कर मुसलमान होता है, इस घटना से क्रोधित होकर सृष्टिनारायण इस घटना के लिए अली अहमद को जिम्मेदार मानते है और बुद्धू को कहते है - " उनसे कह दो कि गाँव में रहना हैं तो सोच - समझकर रहें। नहीं तो बात फिर बहुतै बिगड़ जाएगी। समझे ? " [29] यहाँ धार्मिकता के नाम पर होनेवाले शोषण को लेखक ने व्यक्त किया है।

लल्लु की हत्या भी इस ऊँच - नीच के संघर्ष के कारण हो जाती है। वस्तुतः लल्लू गरीब और पागल है, उसने किसी का कुछ नहीं बिगाडा फिर भी समाज में हो रहे अन्याय के कारण लल्लू को अपनी जान गँवानी पडती है। इस तरह उपन्यास में लेखक ने शोषण की स्थितियों को उजागर किया है।

निष्कर्ष :-

संक्षिप्त में हम कह सकते है कि - प्रस्तुत उपन्यास में शोषण के विविधमुखी आयामों को दिखाकर लेखक ने शोषणात्मक स्थितियों से युक्त वातावरण को उभारा है इसमें जमींदारोंद्वारा जनसामान्यों का शोषण, यौन - विकृती से युक्त शोषण आदि अनेकविध शोषण की स्थितियों को उभारकर लेखक ने एक पाशवी वातावरण को यथार्थ रूप में वाणी देने का काम किया है।

4.5 उत्सव - पर्व एवं दुःखद पीड़ाओं का वातावरण

मानव समाजप्रिय प्राणी है। समाज में रहते हुए वह अनेक अच्छी - बुरी घटनाओं से प्रभावित होता है। फिर भी आनंदोल्लास के लिए अथवा रोज के कामकाज, सुख - दुःख के प्रसंगों से मानव का मन उब जाता है, इससे उत्सव मनाने की उसकी प्रवृत्ति अस्तित्व में आ गयी। इस संबंध में डॉ. ज्ञानचंद्र गुप्त का कथन है, '' भारतीय संस्कृती की यह एक विशिष्ठता है कि, उसमें लौकिक एवं पारलौकिक दोनों प्रकार के जीवन को उज्वल बनाने की भावना रही है। ग्रामीण संस्कृति के पर्वों, त्योहारों, मेलों, कलाएँ, जनरीतियाँ, रूढियाँ एवं विविध संस्कारप्रधान परंपराएँ आदि इसके अवयव हैं।'' [30] इसके माध्यम से लोग अपने कर्मशील जीवन में भी आनंदोल्लास का अनुभव करते हैं। लेखक ने उपन्यास में बलापुर तथा उसके आसपास के इलाकों में मनाएँ जानेवाले विभिन्न उत्सवों पर्वों, मेलों का चित्र प्रस्तुत किया है, साथ ही दुःखद पीड़ाओं का परिवेशानुकूल वातावरण भी कैसे स्पष्ट किया है इसे यहाँ देखेंगे -

उत्सव - पर्व का चित्रण :-

अब्दुल बिस्मिल्लाहजीने बलापुर तथा बलापुर के निकटवर्ती गावों में मनाएँ जानेवाले 'दशहरा' का वर्णन खींचा है। बलापुर में दशहरा बडी धुमधाम से मनाया जाता हैं। इस अवसर पर खेतों में कुछ खास काम न होने के कारण लोग निश्चिंत होते है, इस संबंध में लेखक लिखते है - '' लोग निश्चिंत होकर रामलीला देखने लगे। नारद मोह, धनुष यज्ञ, राम बनवास और अंगद - संवाद में उन्हें बेहद मजा आया फिर जगह - जगह दसहरे हुए। हर जगह राम - लक्ष्मण की सजी हुई चौकियाँ निकलीं। हर जगह रावण का पुतला बना देखते - ही - देखते अनेक रावण जलाकर राख कर दिए गए ।'' [31] जगह - जगह दशहरे के सजे हुए मेले लगते हैं। मेलों में कोई भी दूकानदार अपनी दूकान लगा सकता है। एक के बाद एक गाँव में यह उत्सव मनाया जाता है। लेखक ने पुरवा पतेवरा, बलापुर, करमा के दशहरा और उनमें लगे मेलों का यथार्थ चित्रण उजागर किया है।

दशहरे के बाद दिपावली का भी खास आकर्षण लागों में होता है। लोग अपने - अपने घर इस अवसर पर साफ करते हैं, मिट्टी तथा चुनेसे पुतते हैं। बच्चें पटाखें खरीदते हैं दिपावली में जमजुतिया अर्थात यमद्वितीया के दिन जमुना किनारे खूब बडा मेला लगता हैं। इस दिन स्त्रियाँ जमुना में स्नान करके यमराज को प्रसन्न करने के लिए तथा मृत्युदेवता से अपनी भाइयों की रक्षा के लिए व्रत रखती है। इस जमुना किनारे के '' मेले में घूरपूर करमा और जारी बाजार के आलावा आसपास के गाँवों के इतने दूकानदार और इतनी जनता आती है कि पूरा यमुना - तट सजी - बजी नगरी में बदल जाता है।'' [32] इस साल के जमजुतिया के मेले में भी खूब भीड़ हो जाती है। जगह - जगह तखत बिछाए होते हैं, चंदोवे ताने जाते हैं, लेखक ने इस साल के मेले का वर्णन करते हुए लिखा हैं - '' भाँत - भाँत की चीजें सजाई जा रही थी। हलवाई तो रात में ही पहुँच गए थे। उनकी भट्टियाँ धधक रही थी, जलेबियाँ छन रही थीं। एक तरफ झुला, कहीं रंग - बिरंगी चोटियाँ और फीते लटक रहे हैं, तो कहीं कोई सींकिया पहलवान पिपिहरी बजा -

बजाकर बच्चों को आकर्षित कर रहा है।" [33] लेखक ने बलापुर गाँव में शिवरात्रि के दिन आयोजित रामलीला का भी स्वाभाविक चित्रण खींचा है। गाँव के नवयुवकोंद्वारा नाच - नौटंकी का आयोजन करके उसमें " अमरसिंह राठौर" नाच खेला गया, जिसमें बुद्धू, लल्लू, ननकूद्वारा विभिन्न कलाएँ सादर की जाती है।

उपन्यासकार ने 'पुरवा' के उर्स का मेला का भी सजीव चित्रण प्रस्तुत किया है। - इस अवसर पर मजार को चूने से पोता गय मेला इतवार के रोज था दूकानदार अपनी - अपनी दूकान लेकर पुरवा में पहुँच गए। चूड़ियों की दूकानें, सर्कसवाले का तंबू, तरबूजों की दूकान, झूलेवाले का झूला आदि सभी लोग मेले में उपस्थित थे। बच्चे आइसक्रीम और प्लास्टिक के खिलौनों पर टूटे पड रहे थे। गृहस्थ लोग घर - गिरस्ती के लिए जरूरी चीजें खरीद रहे थे। आदि चित्रण से मेले की गहमागहमी उजागर होती है।

ईसाई लोगों के ख्रिसमस का भी वर्णन उपन्यास में किया गया है, जिसमें ईसाई लोग अँग्रेज मिठाई बाँटते हैं। बच्चों को बिस्कुट, लिबनचूस, पाउडरवाला दूध देते है। हिंदूओं को थोडी बहुत दारू भी पिलाते हैं।

निष्कर्ष :-

संक्षिप्त में लेखक ने दशहरा, दिपावली, रामलीला, पुरवा, ख्रिसमस आदि त्योहारों का तथा पर्वो एवं उत्सवों का वर्णन करके परिवेशजन्य वातावरण को यथार्थ रूप में उभारा हैं जिससे उपन्यास का परिवेश परिपूर्ण एवं प्रभावी बना है।

दुःखद पीड़ाओं का वातावरण :-

अब्दुल बिस्मिल्लाहजी ने उपन्यास में ग्रामांचलिक जनजीवन की अनेक दुःखद घटनाओं को व्यक्त किया है। उपन्यास की कथावस्तु अन्यायग्रस्त लोगों का प्रतिनिधित्व करती है जिससे अनेक दुःखद प्रसंग उपन्यास में व्यक्त हुऐ हैं।

अली अहमद स्थलांतरित बनकर दुल्लोपुर पहुँचने पर उसे दलाल चच्चा के मृत्यु की खबर मिलती है, जिससे अली अहमद तथा नुरू दोनों को भी गहरा दुःख होता है। अली सोचता है जिसके सहारे घर - गाँव छोड के आया, वही आज इस दुनिया में नहीं है। अली अहमद दलाल चच्चा की कब्र के सामने सन्न मारे खडा रहता है, और सोचता है गाँव छोडकर उसने बहुत बडी भूल की है। इस दर्दभरे प्रसंग का चित्रण लेखक ने स्पष्ट किया है इससे उपन्यास में संवेदनशील वातावरण उभरता है।

बुद्धू डिंडौरी की सभा में बेहोश होकर गिरने के समाचार से अली बैचेन होता है, रनिया छाती कूटने लगती है। छोटी ताहिरा माँ - बाप को विवश देखकर रोने लगती है। जिससे घर में मातम - सा मच जाता है। थोडी देर तक रो - पीट लेने के बाद सभी लोग डिंडौरी के लिए चल पडते हैं। इस दुःखद प्रसंग को लेखक ने प्रस्तुत किया हैं। साथ ही डिंडौरी से लौटने पर जलील के परिवार ने गाँव छोडने तथा अली की भउजी का मृत्यु के समाचार ने अली अहमद पूरी तरह टूट जाता है। और रनिया से यह देश छोडने की बात करता है, और अपने दुःख को इस तरह व्यक्त करता है, "खाक अपने लोग है। अपने होते तो इस तरह दगा न

करते।" [34] इस तरह दुल्लोपुर छोडने के समय नुरू और उसकी पत्नी से अली के परिवार की भेंट होती है। जहाँ अली और रनिया अपने आप को गुन्हेगार समझकर माँफी माँगते है। इन दर्दनाक घटनाओं के चित्रण से उपन्यास का वातावरण दुःखद हो चुका है।

बुद्धू - और भूरी भाग जाने के कारण गाँववाले अली अहमद को पीटते हैं। अली बुरी तरह घायल होता है। रनिया भी घर में रो रही है ऐसी अवस्था में भी अली अपने बेटे की चिंता कर रहा है वह सोचता है - "मगर, ये भागकर कहाँ गए होंगे ? किस हाल में होंगे।" [35] इस तरह अली विवश होकर रोता है। इस घटना के वर्णन से दुःखद पीड़ाओं का यथार्थ चित्रण लेखक ने उजागर किया है।

पं. सृष्टिनारायण पाण्डे मुन्ना को बेरहमी से पीटते है, और गाँव छोडने की धमकी देते है, इस पर मुन्ना विवश होकर कहता है - " काहे महराज, अब हम कहाँ जाई ? " [36] फिर भी पाण्डेजी मुन्ना को कोठरी से बाहर निकाल देते है। इस प्रसंग में लेखक जिंदगीभर जिनकी सेवा की उन्होंने ही जिंदगी उजाड दी ऐसी उक्ती के अनुसार मुन्ना की दर्दनाक व्यथा को व्यक्त करते हैं।

सत्तार के गाँव छोडने पर उसकी अम्माँ की दयनीय अवस्था को व्यक्त करके लेखक ने दर्दभरे प्रसंग को उजागर किया है। इस घटना से निराश होकर सत्तार की अम्माँ अपनी स्थिति को व्यक्त करते हुऐ कहती है - " हमने बहुत समझाया मगर वह नहीं माना चला गया अपने बीबी बच्चों को लेकर सहर।" ३७ इस तरह मौलवी साहब की मृत्यु के बाद सत्तार अपनी अम्माँ को बेसहारा बनाकर चला जाता है। इस दुःखद घटना को भी लेखक ने संवेदनशीलता के साथ उभारा है।

सृष्टिनारायण पाण्डेजी की हत्या के जुल्म में निरदोस बुद्धू की गिरफ्तारी पर रनिया आक्रोशित हो उठती है, और खुदा से इंसाफ की माँग करती है। इसी तरह गरीब और पागल लल्लू की हत्या पर सत्तार की अम्माँ दहाड मारकर रोती है और खुदा से इसके बारे में शिकायत करते हुऐ कहती है - " अरे मोर बचवा तुमने का बिगाड़ा था किसी का ? अरे मेरे लाल ..... का मिल गया तुम्हें मारके ? या अल्ला, जे अइसन किहै बा ऊ निरबंसी होइ जाय .....। " [38] इस तरह सत्तार की अम्माँ दुःख प्रकट करती है। इससे उपन्यास में व्यक्त दुःखद पीड़ाओं का वातावरण दृष्टिगोचर होता है।

निष्कर्ष :-

संक्षिप्त में हम कह सकते है कि विवेच्य उपन्यास में अनेकरूपी घटनाएँ ऐसी खींची गयी हैं, जिससे दुःखद स्थितियों का निर्माण होकर संवेदनशीलता उभर उठती है। दलाल चच्चा की मृत्यु, सभा में बुद्धू की बेहोशी, बुद्धू - भूरी के पलायन से अली अहमद की पीटाई, पं. सृष्टिनारायण द्वारा मुन्ना की पीटाई, सत्तार के गाँव छोडने से उसकी माँ की दयनीय अवस्था, पं. सृष्टिनारायण की हत्या पर पकडे जानेवाले निरापराध बुद्धू के परिवार की स्थिति, पागल लल्लू की हत्या ऐसी अनेक घटनाएँ यहाँ घटी है, जिससे उपन्यास में एक दुःखद एवं पीड़ादाई वातावरण उभर उठता हैं।

4.6 पात्रों का विस्थापन

अब्दुल बिस्मिल्लाहजीने अपने 'मुखड़ा क्या देखे' उपन्यास के परिवेश में विभिन्न पात्रों के विस्थापन की प्रक्रिया को चित्रित किया है, जिससे उपन्यास का परिवेश प्रभावित हो जाता है। पात्रों के विस्थापन का विवेचन यहाँ कैसे चित्रित किया है, इसे हम देखेंगे -

उपन्यास का मुख्य पात्र अली अहमद जमींदारी शोषण से त्रस्त होकर एवं परिवार की असुरक्षीतता के कारण बलापुर छोडकर शहपुरा आता है। दलाल चच्चा से मिलने शहपुरा से दुल्लोपुर जाता है। नुरू तथा पतरस की सहायता से अली और उसका परिवार दुल्लोपुर में ही अपना घर बसाते है। यहाँ लेखक ने अली और उसके परिवार के विस्थापन को उजागर किया है।

दुल्लोपुर में अली अहमद के परिवार को छोडकर और एक मुस्लिम परिवार आता है, जिसमें जलील और खलील नाम के दो मुस्लिम व्यक्ति हैं। उनसे जान - पहचान होने के बाद अली अहमद पतरस का घर छोडकर उस मुस्लिम परिवार के साथ रहता है। जिसका वर्णन लेखक इस प्रकार करता है - '' अब अली अहमद भी पतरस का घर छोडकर खाल्हे टोला आ गया था और जलील - खलील की सहायता से दो कोठरियाँ अपने लिए बना ली थी। '' [39] यहाँ लेखक ने अली के परिवार का विस्थापन व्यक्त किया है।

इलाके में भयानक अकाल पडने के कारण लोग काम की तलाश में गाँव छोडकर इधर - उधर स्थलांतरित होते हैं। दुल्लोपुर के लोग भी कोयले के खदानों में काम की प्राप्ति के लिए नौरोजाबाद जाते हैं। अली अहमद भी जलील के साथ नौरोजाबाद चला जाता है। यहाँ लेखक ने प्राकृतिक आपदाओं के कारणों से पात्रों का स्थलांतर दिखाया है।

खलील और जलील का परिवार भी दुल्लोपुर छोडकर हमेशा के लिए चला जाता है। खलील राबिया को लेकर भागकर दुल्लोपुर आता है, वहाँ दशरथ गोंड उन्हें सलाह देते है कि - '' कुछ दिनों के लिए तुम लोग कहीं और चले जाओ वरना उसकी माँ आफत मचा देगी। '' [40] जिससे जलील का पूरा परिवार दुल्लोपुर छोड देता है। यहाँ लेखक ने जलील के परिवार का विस्थापन चित्रित किया है।

अली अहमद खलील तथा जलील के व्यवहार से निराश हो जाता है और सोचता है अब नुरू भाई को कैसे मुँह दिखलाऊँगा और ऐसे में अली की भउजी की मृत्यु का समाचार मिल जाता है, ऐसी अवस्था में दुल्लोपुर में न रहने का फैसला करके बलापुर अपने परिवारसहित लौटता है। यहाँ लेखक ने मोहभंग से निराश बने लोगों का विस्थापन उजागर किया है।

बुद्धू तथा भूरी एक - दुसरे से बहुत प्यार करते है। बुद्धू मुस्लिम है, भूरी हिन्दू है। वे वहाँ काम न मिलने पर मध्यप्रदेश के सीधी जाते हैं। वहाँ बुद्धू पल्लेदारी का काम करता है, और फिर कई दिनों के बाद लौटकर बलापुर आता है। यहाँ लेखक ने आंतरधर्मीय प्यार के कारण तथा समाज के डर से बुद्धू - भूरी का विस्थापन दिखाया है।

बांग्लादेश की निर्मिती के समय पूर्वी पाकिस्तान और पश्चिमी पाकिस्तान के बीच जंग छिड़ जाने के कारण असंख्या शरणार्थी लोग हिंदूस्तान आकर रहने लगे जिसमें उत्तर प्रदेश के बलापुर तक लोग पहुँच जाते हैं। बंगाली बाबू का परिवार भी

इसी करण बलापुर पहुँचता है। बांग्लादेश की आजादी के बाद कुछ लोग हिंदूस्तान में रहते हैं, कुछ वापस जाते है। यहाँ युद्ध की विभिषिकाओं से त्रस्त बंगाली बाबु का विस्थापन दिखाया गया है।

लता शादी के बाद हमेशा के लिए बलापुर छोडती है, और अध्यापिका बनकर बलापुर वापस लौटती है, लेकिन पाण्डे परिवार के दबाव के कारण उसका ट्रांसफर होता है, जिस कारण उसे बलापुर फिर से छोडना पडता है। यहाँ सेवा तथा राजनिति के कारण पात्रों का विस्थापन उजागर हुआ है।

सत्तारद्वारा पोस्ट ऑफिस में भ्रष्टाचार करने पर उसे नौकरी से हटाया जाता है। वह दिन - रात बलापुर छोडने का विचार करता है। उसका कहना है - " आगे बढ़ना है तो गाँव के पचडों से दूर होना ही होगा। " [41] ऐसा सोचकर बीवी बच्चे के साथ बलापुर छोडकर इलाहाबाद जाता है। यहाँ लेखक ने लोगों की नजरों से बचने के लिए दूर भागनेवाले अपराधी सत्तार का विस्थापन व्यक्त किया है।

मुन्ना नचनिया सृष्टिनारायण पाण्डेजी से बेइज्जत होने पर गाँव छोड देता हैं और उपन्यास के अंत में सच्चिदानंद महाराज बनकर बलापुर लौटता है।

इस तरह अब्दुल बिस्मिल्लाहजी ने विभिन्न कारणों से पात्रों के विस्थापन को उजागर करने का प्रयास किया है।

निष्कर्ष :-

संक्षिप्त में हम कह सकते है कि आजादी के बाद भी छोटे - बडे कारणों की वजह से लोगों को विस्थापित होना पडता है। लेखक ने प्रस्तुत उपन्यास में गाँव में होनेवाले जमींदारी शोषण से मुक्ति पाने के लिए भयावह अकाल से पीडित होकर रोजी रोटी प्राप्ति के लिए, प्रेमीयुगलों द्वारा लोगों की आँखे बचाकर अटूट प्रेम की गवाही देने के लिए, जंग की पीड़ा से बचने के लिए, कुटुल राजनीति के कारण आदि के रूप में विविध आयामों को चित्रित करके उपर्युक्त असहाय स्थितियाँ सामान्य लोगों को विस्थापन करने के लिए कैसे बाध्य करती है। इसे स्पष्ट किया है।

4.7 ग्रामीण वातावरण

अब्दुल बिस्मिल्लाहजीने 'मुखड़ा क्या देखे' उपन्यास में ग्रामीण जीवन का यथार्थ चित्रण खींचा है। इस उपन्यास का परिवेश ही ग्रामीण है तथा उपन्यास की कथा भी ग्रामजीवन में पले पात्रों की कथा है। इसलिए उपन्यास के प्रत्येक प्रसंग में एवं घटना में ग्रामांचल का सजीव दर्शन पनपता हैं। प्रस्तुत उपन्यास में वर्णित ग्रामीण परिवेश का वातावरण -

सांप्रदायिकता :-

बलापुर के मुसलमानों की तरफ देखने की जमींदारों की दृष्टी ग्रामीण जीवन में सांप्रदायिकता का वातावरण प्रस्तुत करती है। लडकी के विवाह में अली अहमद के न आने के कारण रामवृक्ष पाण्डेजी उस पर अपना क्रोध उतारते है। जबलपुर में हिंदू - मुसलमान लोगों में दंगा होने के कारण भयंकर मारकाट होती है, उस कारण गाँव जीवन के स्कूली बच्चों में भी सांप्रदायिकता की विदग्धता के कारण बुद्धू को शाखा में उपस्थित रहने नहीं दिया जाता, तथा जातीयता एवं धर्म के नाम पर चिढ़ाकर उसका अपमान किया जाता है। ये प्रसंग ग्रामजीवन की सांप्रदायिकता को उजागर करते है।

विकास के नाम पर विस्थापन :-

इलाके में पडे भयानक अकाल के कारण लोगों का काम - धंदों के लिए इधर - उधर भटकना, ढोर – डंगरों का चारा - पानी के अभाव में मरना, खेतों में बुआई न होना, नदी नालों का सूख जाना, सरकार के द्वारा भेजी गयी राहत सामग्री - पर्याप्त न होना, उसमें भी देशी अधिकारीद्वारा भ्रष्टाचार किया जाना, अकालपीड़ा से ग्रस्त लोगों का वातावरण प्रस्तुत करके लेखक ने अकाल से त्रस्त लोगों के विस्थापन को भी दिखाया है।

अवैध यौन - सम्बन्ध :-

पं. सृष्टिनारायण पाण्डे मुन्ना नचनिया से अप्राकृतिक समलिंगी अवैध सम्बन्ध रखता है तथा उसे रखैल बनाते है। उससे दिन - रात सेवा करवाते है। उसी तरह बुद्धू और भूरी के बीच के अनैतिक सम्बन्ध गाँव में जातियवाद को बढ़ावा देते हैं। यहाँ लेखक ने सृष्टिनारायण पाण्डे और मुन्ना, तथा बुद्धू और भूरी के अनैतिक संबंध दिखाकर गाँव के अवैध यौन - सम्बन्धों पर प्रकाश डाला है।

जातीय एवं धार्मिक भेदाभेद :-

बलापुर गाँव जातियों में बँट गया है, यहाँ ब्राह्मण, कायस्थ, अहीर, चमार, पासिये बनिया, मुसलमान, हलवाई, लुहार, कुम्हार सभी जातियों के लोग रहते हैं

जिससे लोग कहते है - " हिंदूस्तान तो यहाँ के गाँवों में बसता है। " [42] यहाँ के दलितों को उपेक्षाभरी दृष्टि से देखा जाता है। मुसलमानो में भी ऊँच - नीच का भेदभाव है, जब्बार मौलवी साहब अपने आप को उच्चवर्णीय तथा अली अहमद को निम्नवर्गीय मुसलमान मानते है। जबलपुर में अन्वर और उषा नामक प्रेमियों के कारण धार्मिक विवाद निर्माण होकर पूरे देश में इसका असर होता है। बुद्धू - भूरी के प्रेम से बलापुर में भी जातीय विवाद भडकाया जाता है। कल्लू चुड़िहार और शब्बीर चुड़िहार का विवाद उपन्यास के जातीय एवं धार्मिक भेदाभेद को स्पष्ट करता है।

अंधविश्वास :-

प्रस्तुत उपन्यास में बिशुन भाट का लडका लल्लू स्वाधीनता के समय पागल हो जाता है जिसे ठिक करने के लिए बिशुन भाटद्वारा दुआएँ माँगना, ताबीज बांधना, तथा दुल्लोपूर के खलीलद्वारा शादी तय करने के लिए "सुम्मार का जाना ठिक नहीं होगा, मुडकी पूरब में है सोम - सनीचर पूरब न चालू " [43] ऐसा कहना ताहीरा के बच्ची के रोने पर गाँव की स्त्रियोंद्वारा हनुमानजी का जाप करने का उपाय बताना, गाजी मियाँ से मानता मानता, अशोककुमार पाण्डेद्वारा ताहिरा को अपनाने के लिए ज्योतिष विद्या के उपाय करना आदि घटनाओं में गाँवजीवन में स्थित अंधविश्वास स्पष्ट झलकता है।

जमींदारी टूटन से पीड़ित ग्रामीण जमींदार :-

लेखक ने प्रस्तुत उपन्यास में पं. रामवृक्ष पाण्डे और जब्बार मौलबी इन दो जमींदारों की स्थिति उजागर की है। पंडित नेहरूजी के द्वारा सन 1952 में जमींदारी प्रथा खत्म करने के निर्णय से पाण्डेजी के परिवार की हालत खराब हो जाती है, रामवृक्ष पाण्डे को सदमा पहुँचता है, सृष्टिनारायण खेती की और मुडता है, दयाशंकर नेतागिरी की ओर मुडता है, मजदूरों पर जमींदारों का धाक कम हो जाता है। जब्बार मौलबी साहब की हालत खराब होती है, सत्तार के नौकरी से प्राप्त पैसों से घर चलाया जाता है आदि प्रसंग जमींदारों की पीड़ा के वातावरण को उभारते हैं।

चुनावी राजनीति से प्रभावित ग्रामजीवन का वातावरण :-

देश में दूसरी बार चुनाव घोषित होना, काँग्रेसद्वारा 'दो बैलों की जोडी' चुनाव चिह्न पर चुनाव लडना, बलापुर में काँग्रेस, जनसंघ, सोशलिस्ट तथा अनेकानेक निर्दलीय पार्टियों की गाडियों का गाँव में आना, पोस्टरों से गाँव भरना, बच्चों के झुंडोद्वारा विभिन्न पार्टियों का प्रचार करते रहना, अशोककुमार पाण्डे के अनुयायी और दुलारे के अनुयायी का एक - दूसरे पर टूट पडना आदि घटनाएँ ग्रामीण जीवन के चुनावी स्थिति की गहमागहमी को स्पष्ट करती है।

हड़पनीति :-

बलापुर पोस्ट ऑफिस के बचतखातों में से सत्तार बावन हजार रूपयें हड़प करता है। दुल्लोपुर में पहाडी जंगल की सरकारी जमीन जलील तथा अली अहमद खेती के लिए तैयार करते है। सरकार ने 'भूमिहीन योजना' के अंतर्गत दी हुई जमीन को अशोककुमार पाण्डे हड़प करता है। आदि घटनाएँ ग्रामीण जीवन में दिखाई देनेवाली हड़पनीति के वातावरण को उजागर करती है।

शोषण के विविध आयाम :-

ग्रामीण जमींदारों से गाँव की छोटी - छोटी जाति के लोगों का शोषण प्रस्तुत उपन्यास में उजागर हुआ है, रामवृक्ष पाण्डेद्वारा मखदूम नाऊ और अली अहमद का शोषण यहाँ उजागर हुआ हैं।

निष्कर्ष :-

संक्षिप्त में हम कह सकते है कि किसानों मजदूरों का आंदोलन, ग्रामों के रीतिरिवाज, सांस्कृतिक रूढियाँ, प्रंपराएँ, अंधविश्वास, भेदाभेद, चुनाव, हड़पनीति, सांप्रदायिकता आदि घटनाओं को उपन्यासकार ने ग्रामीण वातावरण के रूप में बडे ही सजीवता के साथ चित्रित किया है।

4.8 पहाडी भूभाग का वातावरण

अब्दुल बिस्मिल्लाहजी के 'मुखड़ा क्या देखे' उपन्यास का परिवेश ग्रामीण है। उस प्रदेश के पहाड, नदियाँ, रस्ते, जंगल, वृक्ष, खेत, पंछी, प्राणि आदि के चित्रण ने उपन्यास में प्राकृतिक सौंदर्य से युक्त वातावरण में वृद्धी हुई है। हम यहाँ पहाडी भूभागों का चित्रण वातावरण के रूप में कैसे उभारा गया है इसे देखेंगे -

प्रस्तुत उपन्यास में लेखक ने एक प्रसंग में लेखक ने बलापुर से नैनी पहुँचने के मार्ग का वर्णन किया है। वहाँ कोई सडक नहीं है। लोग बाग बगीचों को पार करते चलते हैं, जमीन समतल नहीं हैं। छोटे - मोटे चढाव जमीन पर तैयार हुऐ हैं, मटियार जमीन के चढ़ाव पर बसा हुआ है वहाँ से नैनी दिखाई देती है, लेखक कहते है " माटियार की मिट्टी काली थी। जरा - सी बारिश होते ही उसमें पाँव धसने लगते थे। " [44] ऊबड - खाबड जमीन के कारण खेती करने के लिए भी समस्या निर्माण होती है।

छोटे - छोटे पहाड बरसात तथा बरसात के बाद के दिनों में हरे - भरे दिखाई देते है, पहाडों की बाजू से नदियों नालों में बरसात का मटमैला पानी छूल - छूल करता बहता है, जगह - जगह बच्चे बंसियाँ लगाए बैठे है, टीकरों पर तरह - तरह के अजनबी दरख्त उगे हुए है। दुल्लोपुर के पहाडी जमीन पर हरी झाड़ियों पर लौकी, सेम और कुम्हडे की बेलें फैली हूई है, उसके दूर - बाजू में घना जंगल है, कहीं - कहीं खेत के टुकडे आसमान में बादलों से बन जानेवाली डिजाइनों की तरह लगते हैं।

बलापुर के तालाब के नजदीक के परिवेश का वातावरण लेखक ने इस प्रकार स्पष्ट किया है - " तालाब बिल्कुल सुख गया था। बय एक किनारे पीपल के पेड के पास थोडा - सा पानी भरा हुआ था, जहाँ कोई न कोई हमेशा कपडे धोते हुऐ नजर आता था। उस पारवाली आमराई से कोयल की कूक हमेशा सुनाई पडता थी। " [45] इस इलाके में हमेशा कई पंछी घुमते फिरते हैं। तालाब के एक किनारे बडे पेड है, दूर - दूर तक टिकोरों से लदी हुई आमराइयाँ और पेडों में छिपी कोयलों की कूक मन को हमेशा के लिए प्रसन्न कर देती है।

बरसात के दिनों में खुब वर्षा होने के कारण चारों तरफ जलाहल होता है न खेत दिखते हैं, न पेड। तालाब का पानी बाहर आता है, गाँव की गलियाँ, नदियाँ बन जाती हैं। सावन के महीने में खेतों में धान के पौधे लहरा उठते हैं, बाग - बगीचों में पानी भरा रहता हैं।

वर्षा ऋतु के बाद इलाके में दिनभर गर्मी तथा रात में हल्की - हल्की ठंडक महसूस होती है। बाहर अच्छी - खासी ओस गिरती है, " दिन में धूप इतनी तेज होती है कि आदमी की चमडी काली हो जाय।" [46]

जेठ के महीनें में दिन में बवंडर चलते तथा शाम को खूब आँधी आती है। दूर - दूर तक कटी हुई फसलों के खेत निले - निले पहाडों का दर्शन कराते है। अनबोई जमीन पर जगह - जगह घास दिखाई देती है वहाँ तथा छोटे - छोटे पहाडों पर बकरियाँ, ढोर, डाँगर चरते रहते हैं। चरवाहें के लडके - लडकियाँ बगिया में कैथ तोडते हैं, नमक - मिर्च के साथ कैथ खाते हैं, कुछ बच्चे चने के

खेत में घुसे हुऐ है, यह दृश्य हमेशा पहाडी इलाकों में दिखाई देता है। जिसका सजीव चित्रण लेखक ने प्रस्तुत किया है।

निष्कर्ष :-

संक्षिप्त में हम कह सकते है कि लेखक ने यहाँ बलापुर से नैनी तक छाये पहाड का, बरसात में पहाडों की हरीतमा का, बलापुर के नजदीक के तालाब का गर्मी के दिनों का, बवंडरों का, ढोर - डंगरों का, चरवाहों की गतिविधियों का परिवेशजन्य वातावरण यहाँ उभारकर कुदरत की हरियाली का सुहावना चित्रण खींचा है।

4.9 अकालग्रस्त स्थितियों का वातावरण

'मुखड़ा क्या देखे' उपन्यास में लेखक ने प्राकृतिक आपत्तियों के कारण निर्माण हुई गंभीर परिस्थिति को स्वाभाविक ढंग से व्यक्त किया है, तथा इस स्थिति का फायदा उठानेवाले लोगों पर करारा व्यंग्य किया है। अकाल की महाभयानक स्थिति लोगों के जीवन में किस तरह हलचल मचाती है, इसका विवेचन लेखक ने विवेच्य उपन्यास में कैसे किया है इसे देखेंगे -

अली अहमद जब दुल्लोपुर में रहता है, तब भयावह स्थिति का निर्माण होता है। बरसात के मौसम में, आषाढ और सावन इन दो महिनों में बरसात की एक भी बुंद नहीं टपकी। खेतों का सारा काम बंद हो जाता है, जंगलों में एक भी पत्ती दिखाई नहीं देती है, जानवरों की हालत भी खराब होती है, दिन - ब - दिन चारा तथा पानी के अभाव में वे मर जाते हैं। माँगने पर भी किसी को अन्न नहीं प्राप्त होता है। लोग चिंतित हो गए है वह सोचते है - " राजा ने जरूर कोई पाप किया होगा, इसीलिए गिरानी पड़ी है। " [47] और ईश्वर से इस हालत से बचाव के लिए प्रार्थना करते हैं मगर स्थिति पहले से भी अधिक खराब हो जाती है।

अकालग्रस्त स्थिति में अली और रनिया भी चिंतित है क्योंकि उनकी दूकान टूट गई है, रनिया इधर - उधर से कुछ माँगकर लाती है, जिससे एक वक्त का काम चल जाता है। इलाके के जर्बदस्त अकाल के कारण खेतों में बिल्कुल बुआई नहीं हुई है, जिन्होने कुछ बोया है वे अंकुर देखने के लिए तरस गए हैं।

लोग गाँव छोडकर काम - धंदे की तलाश में विस्थापित हो रहे है, एक दिन अली अहमद भी जलील के साथ कोयले के खदानों में काम करने नौरोजाबाद चला जाता है।

भारत सरकारद्वारा अकालग्रस्त जनता के लिए राहत सामग्री बाँटी जाती है, मगर उसकी मात्रा पेट भरने के माफिक नहीं है। लोग कतार में खडे - खडे सामग्री के बाँटने में हो रही देरी से संत्रस्त हो रहे हैं। लोग अलहदी देसी अधिकारी पर व्यंग तथा अँग्रेज अधिकारी हेरटुम साहब का गुणगान करते हुए कहते है - " हेरटुम साहब की तो बात ही न करो, कहाँ वे अँग्रेज और कहाँ ये काला साहब ? " [48]

लोग मिली हुई सामग्री के बारे में अपने - अपने मत प्रकट करते हैं, तथा सामान खत्म न हो जाए इससे चिंता भी प्रकट करते हैं। खलील के पासवाले सामान को देखकर चर्चा करनेवाले लोगों से उद्देश्य कर खलील कहता है - " सामान तो खूब है, मगर साहब कंजूसी कर रहा है। यह भी कह रहा था कि अगली बार पैसा लेकर आना। चवन्नी का पाउडर और अठन्नी का ये।" [49]

यहाँ देशी अधिकारीद्वारा राहत सामग्री में होनेवाली घुसखोरी की प्रवृत्ति पर लेखक ने प्रकाश डाला है। एक तो महाभयानक अकाल के कारण लोग भूखे रहे हैं ऐसी अवस्था में सरकारद्वारा भेजी सामग्री प्राप्त करने के लिए पैसे देने पडते हैं, ऐसी दयनीय अवस्था से लोग गुजर रहे हैं। भूखे लोगों के पेट का अनाज छीन लेनेवाले हमारे प्रशासकीय लोगों की नियत को लेखक ने उजागर किया है। इस तरह लेखक ने अकाल और अकाल की भयानक स्थिति से उत्पन्न परिस्थिति का यथार्थ और परिवेशजन्य वातावरण उभारा है।

निष्कर्ष :-

संक्षिप्त में लेखक ने अकाल पीड़ा का भयावह चित्रण प्रस्तुत करते हुए परिवेशजन्य वातावरण को यथार्थता के साथ प्रस्तुत किया है। अकाल में जनसामान्यों की हालत का, ढोर - डंगरों की स्थिति का, किसानों की निराशा का चित्रण यहाँ देखने को मिलता है।

4.10 हिंदू - मुस्लिम संघर्ष का वातावरण

'मुखड़ा क्या देखे' उपन्यास की कथा समाज के उच्चवर्णिय हिंदू - मुस्लिम और निम्नवर्गीय हिंदू - मुस्लिम के बीच के संघर्ष की कथा है। लेखक ने इस कथावस्तु में हिंदू - मुस्लिम संघर्ष के वातावरण कैसे चित्रित किया है। इसे यहाँ देखेंगे -

एक दिन अली अहमद सिंधी की दुकान में बैठे - बैठे रेडियो से खबर सुनता है, जबलपूर में दंगा हो गया है। इससे वह चिंतित होकर सोचता है - " तो क्या हिंदूस्तान के फिर दो टूकडे होंगे ? आखिर कितने टूकडों में बँटेगा यह मुल्क ? " [50] तभी उसे आजादी की घटनाएँ याद आती हैं, उसे बलापुर में पाकिस्तान बनने के वक़्त हुई मार - काट की खबर मिली थी, और हिंदू - मुस्लिम के बीच के वैरभाव की जानकारी प्राप्त हुई थी। लेकिन इतने दिनों बाद हिंदू - मुस्लिम एक दुसरे का खून बहा रहे हैं, यह जानकर वह अस्वस्थ हो उठता है।

अली अहमद सिंधी से इस दंगे के बारे में पूछता है, तो सिंधी इस दंगे का कारण स्पष्ट करते हुए कहता है कि - " जबलपुर के एक सेठ का लडका अनवर और दूसरे सेठ की लडकी है ऊषा दोनों में कुछ प्यार - मुहब्बत हो गई बस ..... नामुरादों को मौका मिल गया। लड पडे। अब न जाने कितने बेगुनाहों का खून बह रहा है.....। " [51]

उस रोज दुल्लोपूर के स्कूल में जल्दी छुट्टी हो गई, बुद्धू घर आकर अली अहमद को जबलपुर में घटित कल की घटना बताता है, जबलपुर में हिंदू - मुसलमानों के बीच दंगा हो गया वहाँ देश के प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरूजी आए और उन्होंने लोगों को शांत रहने का आवाहन किया। उन्होंने हिंदूओं से कहा - " मुसलमानों का क्या है, वे तो बकरे - बकरियाँ हैं। तुम लोग जब चाहो उन्हें काट कर खा सकते हो मगर यह न भूलो कि वे भी तुम्हारे ही घर के सदस्य हैं। क्या अपने ही घर के सदस्यों को मारने में तुम्हें दया नहीं आएगी ? " [52] इस पर हिंदू - मुसलमानों ने दंगा, खून - खराबा रोक दिया। दंगे की पृष्ठभूमि पर नेहरूजी ने डिंडौरी में भी भाषण दिया । यहाँ लेखक ने सांप्रदायिकता के नाम पर होनेवाले दंगे फसादों का चित्रण सांकेतिकता के साथ वर्णित किया है।

बुद्धू - भूरी के प्रेम को भी सांप्रदायिकता का नाम देकर गाँव में हिंदू - मुस्लिम संघर्ष का वातावरण निर्माण करने का काम सृष्टिनारायण पाण्डे करते हैं। वह सत्तार को बुद्धू की हरकत के बारे में कहते है - " ऊ चुड़िहार के बच्चे को पंख निकल रहे है। उसे ठिक तरह से समझाना, कहना कि अब भी टेम हैं, बाज आ जाय अपनी हरकत से, नहीं तो भई हिंदू - मुसलमान का मामला बन जायगा तो फिर हम नहीं जानते। " [53] यहाँ हिंदू - मुस्लिमों के बीच की दरारों को बढ़ाने का काम पाण्डेजी करते हैं। रामदेउवा चमार धर्मपरिवर्तन करके मुसलमान हो जाता है तब भी सृष्टिनारायण पाण्डे हिंदू - मुस्लिम संघर्ष खडा करके बुद्धू को धमकाते है।

अतः इन घटनाओं से उपन्यासकार ने उपन्यास में किस तरह समाज में धर्म के नाम पर विवाद खडे करके बेगुनाहों का खून बहाया जाता है, तथा छोटी -

छोटी घटनाओं को भी धार्मिकता का नाम देकर संघर्ष फैलाया जाता है, इसको उजागर किया हैं।

निष्कर्ष :-

संक्षिप्त में हम कह सकते है कि हिंदू - मुस्लिम संघर्ष की हवा सांप्रदायिक फसादों का बवाल खडा करती है। छोटे - छोटे कारणों को लेकर समाज विघातक शक्तियाँ हिंदू - मुसलमानों के बीच की खाइयाँ बढा देती है। लेखक ने तत्कालीन प्रधानमंत्री नेहरूजी के भाषण के माध्यम से लोगों का प्रबोधन करते हुए यह संदेश दिया है कि हिंदू - मुसलमान एक घर के भाई - भाई हैं। इन्हें इस प्रकार सांप्रदायिकता के नाम पर लड - झगडकर खून बहाना नहीं चाहिए।

4.11 धर्मपरिवर्तन का वातावरण

स्वातंत्र्यपूर्व कालखंड से हिंदूस्तान में अँग्रेजों के कारण धर्मपरिवर्तन की प्रक्रिया चल रही थी, आजादी के बाद भी ईसाई लोगोंद्वारा इस प्रक्रिया को गति प्रदान की। अब्दुल बिस्मिल्लाहजीने अपने 'मुखड़ा क्या देखे' उपन्यास में धर्मपरिवर्तन की प्रक्रिया को चित्रित किया है, इसका विवेचन यहाँ प्रस्तुत है।

प्रस्तुत उपन्यास में अली अहमद बलापुर छोडकर दुल्लोपुर अपने परिवार के साथ जाता है। वहाँ मिशन के इंडियन फादर अशोक फ्रांसिस अली अहमद को ईसाई धर्म स्विकारने की सलाह देते हुए कहते है - " अरे अली अहमद तुम ईसाई क्यों नहीं हो जाते ? आखिर प्रभु यीशु ख्रीस्त को तो तुम लोग भी मानते हो। अगर तुम ईसाई हो जाओ न, तो तुम्हारे बेटे को हम विलायत भिजवा दें पढने के वास्ते। " [54] लेकिन अली अहमद इस प्रस्ताव को नकार देता है।

दुल्लोपुर में गोंड, बैगा, कोल, पनिका जाति के कई लोगों ने ईसाई धर्म स्विकार कर लिया है। दुल्लोपूर में अली की मदद करनेवाला पतरस भाई पहले रूपसिंह गोंड था तथा दुधनिया का अंतोनी भुलवा कोल था। इन्होंने धर्म परिवर्तन करके ईसाई धर्म स्विकार किया हैं। पतरस भाई भी अली को ईसाई धर्म स्विकार करने से अस्पताल अथवा स्कूल में नौकरी मिल सकती है, ऐसा कहता है। अली अहमद अपने बेटे के भविष्य का विचार करके इसके बारे में रनिया से चर्चा करता है। मगर रनिया इसका विरोध करते हुए कहती है - " तो क्या तुम ईसाई हो जाओगे ? या अल्लाह। धरती तो छूट ही गई, लगता है अब अल्लारसूल भी छूट जाएँगे। पता नहीं कौन कुसाइत में जन्मी थी मैं। " [55] यहाँ लेखक ने धर्म परिवर्तन के लिए ईसाई लोगोंद्वारा दिए जानेवाले लाभों का चित्रण किया है।

बलापुर का रामदेउवा चमार भूखा मर रहा था, जिसकी घुरपुर के हाफिज्जी ने मदद की जिस कारण उसने अपना धर्म छोडके इस्लाम धर्म स्विकार किया। जिसके बारे में तोते पासी कहता है - " देखो भाई, जहाँ पेट भरता हैं हुवँई अपनी मुक्ती दिखाई पड़ती है। चारों तरफ शोर है ही, कि हुवाँ इतने जने मुसलमान हो गए। ई भी हो गया। " [56] यहाँ लेखक ने अपना पेट भरने के लिए धर्मपरिवर्तन करनेवाले लोगों का चित्रण किया है। रामदेउवा चमार मुसलमान होने पर पं. सृष्टिनारायण पाण्डे बुद्धू को धमकातें हुए कहते है - यह सब तुम्हारे अब्बा का काम है। अपने पिताजी को कह दो गाँव में रहना है तो सोच समझ के रहे, नहीं तो बात फिर बिघड जाएगी। समझे ? " [57] अशोककुमार पाण्डे भी चमरौटी में जाकर हम - तुम सभी हिंदू है, कहते हुए भाषण देता है, मगर रामदेउवा चमार उसे खरी - खरी सुनाता है, इस प्रसंग से धर्म - परिवर्तन की प्रक्रिया का इलाके में हो रहा फैलाव - वातावरण स्पष्ट होता है।

अशोककुमार पाण्डे ताहिरा से प्यार करता है। उसे अपनाने के लिए वह हर तरह का प्रयास करता है, वह ताहिरा को अपने खून से प्रेमपत्र लिखता है उसमें वह अपना धर्म त्यागने की तैयारी भी व्यक्त करता है, जिससे धर्मपरिवर्तन की हवा का वातावरण उजागर होता है।

निष्कर्ष :-

संक्षिप्त में हम कह सकते है कि लाभ को मध्यनजर रखते हुए कई लोग धर्मपरिवर्तन करते हैं तो अली अहमद जैसे लोग अपने धर्म पर ही डटे रहते हैं। धर्म - परिवर्तन के नाम पर मिलनेवाले फायदों को वह नकारता है। धर्म - परिवर्तन के लिए दिखाई जानेवाले प्रलोभन आज भी भारतीय समाज में स्थित है, इसका यहाँ पता चलता है। मुगल सम्राटों ने शक्ति के बल पर धर्मपरिवर्तन के लिए अन्य धर्मियों को बाध्य किया तो इसाई धर्म गुरूओ ने बडे - बडे आमिश दिखाकर धर्मपरिवर्तन की हवा को भारतीय जनमानस में फैलायी। इन्हीं तथ्यों के आधार पर लेखक ने अपने उपन्यास में इस विचार को प्रकट किया है, ऐसा लगता है।

समन्वित निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्याय में विवेच्य उपन्यास का परिवेश, इसी परिवेश में बनती - बिगड़ती स्थितियों का चित्रण, स्वातंत्र्योत्तर भारतीय जनमानस की जीवन शैलियों में उभरी अनेक सी कठिनाइयाँ ग्रामीण जीवन में सबलों के द्वारा दुर्बलों का होनेवाला शोषण, अपने दुःख दर्दों को चंद दिनों के लिए भूलने के लिए लोगोंद्वारा मनाये जानेवाले उत्सव - पर्व, बनती - बिगड़ती स्थिती में विस्थापन, ग्रामीण वातावरण में चित्रित अनेकसी भयावह हिंस्त्र गतिविधियाँ, पहाडी भूभागों में बसनेवाले लोगों की स्थिति एवं गति, अकाल जैसे प्राकृतिक प्रकोपों से ग्रामीण जनजीवन में व्याप्त भयावह स्थिति, हिंदू - मुसलमानो के संघर्ष से उभरी सांप्रदायिकता की विदग्धता, धर्म - परिवर्तन की हवा का सामान्य जनमानस पर पडनेवाला प्रभाव आदि के चित्रित परिवेश को तथा वातावरण को तलाशने का प्रयत्न हमने किया है और यह भी दिखाया है कि प्रस्तुत उपन्यास का परिवेश युगानुकूल, समयानुकूल, कालबोध के अनुकूल उभारा गया है।

इस उपन्यास में पहाडी, ग्रामीण भूभाग का वहाँ के तिज - त्योहारों का, वहाँ की शोषणावस्थाओं का, वहाँ के विधिविधानों का, वहाँ की परंपराओं का, ऊँच - नीच भेदभाव का, धर्म के बारे में जनमानस में स्थित अवधारणाओं का यथार्थ परिवेश खडा कर दिया है। जनसामान्य पर प्राकृतिक आपदाओं से उभर उठी पीड़ाओं का, विस्थापन का, छोटे - मोटे उद्योग व्यवसाय करके रोजीरोटी कमाने का वातावरण भी लेखक ने यथार्थ ढंग से उभारा है। स्पष्ट है कि प्रस्तुत उपन्यास परिवेश तथा वातावरण की दृष्टि से अत्यंत सफल है।

संक्षिप्त हम कह सकते है -

1) उपन्यास में परिवेश का तथा देशकाल का वातावरण व्यापक रहा है। उसमें बलापुर शहपुरा, इलाहाबाद, पुरवा और दुल्लोपुर के परिवेश को चित्रित किया है।
2) प्रस्तुत उपन्यास में 1947 से 1977 तक तीन दशकों का कालखंड वातावरण के तथा परिवेश के रूप में उभारा है।
3) उपन्यास में लेखक ने स्वातंत्र्योत्तर भारतीय जनमानस की स्थितियों की जीवन शैली का, उनके ऊपर उभरनेवाले परिवेशजन्य आपत्तियों का यथार्थ चित्रण किया हैं।
4) उपन्यास की कथा ग्रामीण परिवेश में घटित होने के कारण हिंदूस्तान के देहातों, गाँवों कस्बों के जनजीवन का तथा वहाँ के उत्सव, त्योहारों, रूढियों परंपराओं का सजीव वातावरण उपन्यास में परिलक्षित होता है।
5) लेखक ने उपन्यास की कथा में शोषणात्मक स्थितियों का एवं देश की विभिन्न बनती - बिगड़ती घटनाओं का सजीव वातावरण स्वाभाविक ढंग से उभारा हैं।
6) लेखक ने उत्तर प्रदेश तथा मध्यप्रदेश के पहाडी भूभाग का और वहाँ उत्पन्न अकालग्रस्त स्थितियों को भी परिवेशजन्य वातावरण के रूप में उभारा है।
7) प्रस्तुत उपन्यास में निर्माण हुए धर्मांतरण के वातावरण को भी रचनाकार ने उजागर किया है।

संदर्भ - ग्रंथ

1. हिन्दी उपन्यास, शिवनारायण श्रीवास्तव पृष्ठ - 453
2. काव्य के रूप, गुलाबराय पृष्ठ - 168 - 169
3. मुखड़ा क्या देखे, पृष्ठ - 10
4. वही, पृष्ठ - 39
5. वही, पृष्ठ - 40
6. वही, पृष्ठ - 58
7. वही, पृष्ठ - 61
8. वही, पृष्ठ - 125
9. वही, पृष्ठ - 130
10. वही पृष्ठ - 128 - 129 -
11. वही, पृष्ठ - 129
12. वही, पृष्ठ - 180
13. वही, पृष्ठ - 26
14. वही, पृष्ठ - 18
15. वही, पृष्ठ - 42
16. वही, पृष्ठ - 42
17. वही, पृष्ठ - 87
18. वही, पृष्ठ - 122
19. वही, पृष्ठ - 143
20. मुखड़ा क्या देखे पृष्ठ - 161
21. वही, पृष्ठ - 141
22. वही, पृष्ठ - 233
23. वही, पृष्ठ - 175
24. वही, पृष्ठ - 203
25. वही, पृष्ठ - 29
26. वही, पृष्ठ - 34
27. वही, पृष्ठ - 76
28. वही, पृष्ठ - 174
29. वही, पृष्ठ - 213
30. बाणभट्ट की आत्मकथा, हजारीप्रसाद द्विवेदी पृष्ठ - 13
31. मुखड़ा क्या देखे, पृष्ठ - 112
32. वही, पृष्ठ - 113
33. वही, पृष्ठ - 113
34. वही, पृष्ठ - 93

35. मुखड़ा क्या देखे, पृष्ठ - 158
36. वही, पृष्ठ - 173
37. वही, पृष्ठ - 200
38. वही, पृष्ठ - 235
39. वही, पृष्ठ - 65
40. वही, पृष्ठ - 91 - 92
41. वही, पृष्ठ - 189
42. वही, पृष्ठ - 11
43. वही, पृष्ठ - 83
44. वही, पृष्ठ - 35 - 36
45. वही, पृष्ठ - 106
46. वही, पृष्ठ - 107
47. वही, पृष्ठ - 74
48. वही, पृष्ठ - 75
49. वही, पृष्ठ - 76
50. वही, पृष्ठ - 86
51. वही, पृष्ठ - 86
52. वही, पृष्ठ - 87
53. वही, पृष्ठ - 141
54. वही, पृष्ठ - 58
55. वही, पृष्ठ - 62
56. वही, पृष्ठ - 214
57. वही, पृष्ठ - 213